कामयाबी के सूत्र

निराशा से सफलता तक का सम्पूर्ण मार्गदर्शन

करतार सिहं सांदिल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Kartar Singh Sandil 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69822-33-6

Cover design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: June 2026

समपर्ण

मोरे स्वर्गीय माता–पिता व

बड़े भाई जी को समर्पित

लेखक –करतार सिहं सॉदिल।

मोबाईल – 9816044702

Email :kartarsandil@rediffmail.com

सर्वाधिकार सुरक्षित। – लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंक छापना अवैध है।

भूमिका

आप सब के आशीर्वाद और सहयोग से मैं अपनी लिखी 15वीं पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस पुस्तक में मैंने अपने अनुभव से कुछ कामयाबी के सूत्र एकत्रित किए हैं। इससे एक इंसान अपने जीवन में कामयाबी हासिल करके एक आम इंसान से एक खास इंसान बन सकता है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूॅ कि मेरी इस पुस्तक को जितनी बार पढ़ोगे उतनी ही बार आप अपने जीवन में नित नया सकारात्मक बदलाव देखेंगे। मैं अपने जीवन में कई बार असफल भी हुआ हूॅ। लेकिन मेरी सकारात्मक सोच व आसमान से भी ऊँची उड़ान करने की चाहत ने मेरा हर सपना पूरा किया है जिसकी मैंने कल्पना की। मेरे जीवन में मेरी माता और पूर्व सैनिक पिता जी का आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ रहा। मेरे जीवन में मेरे बडे भाई ऑरनरी लैफटीनैंट बलवंत सिहं की शालीनता व ज्ञान और छोटे भाई ऑरनरी कैप्टन राजिन्द्र सिहं का स्नेह मेरी सफलता में साथ रहा। जालन्धर व ऑस्ट्रेलिया प्रवासी श्री सतीश महाजन और होशियारपुर व अमेरिका प्रवासी श्री मनोज गुप्ता मेरी सफलता के हमेशा ही प्ररेणा स्रोत रहे हैं। मेरी जीवन संगिनी सीनीयर नर्सिंग अफसर श्रीमति नीलम सांदिल के मीठे व कटू पलों ने मेरा जीवन भर का साथ निभाया जा रहा है।

मैं आशा करता हूॅ कि मेरे हृदय–स्नेही पुस्तकों के पाठक इस पुस्तक पर भी पूर्व की तरह स्नेह एवम् आशीर्वाद देंगे।

लेखक –करतार सिहं सॉदिल।

मोबाईल – 9816044702.

Email :kartarsandil@rediffmail.com

कामयाबी के सूत्र

1. बीते हुए समय की सफलता और असफलता हमें अपनी कमियों और उपलब्धियों का ज्ञान करवाती हैं। अगर अतीत के समय में हमें जिन आदतें एवम् लोग हमारी असफलता का कारण बने है उनका आप पूर्ण रूप से त्याग करें। और जिन आदतों एवम् लोगों ने हमें सफलता दिलाने में सहयोग किया है उनकी पूरी उम्र समीपता पाने का सौभागय प्राप्त करते रहें। इस गुजर चुके समय को कोसने की कभी भी गलती मत करना। क्योंकि उस गुजरे हुए समय को आप बदल ही नहीं सकते। लेकिन बीते हुए समय की असफलताओं को आप सफलता में बदलना चाहते हो तो इसकी शुरुआत आज और अभी से ही शुरू करें। आज के समय के मालिक आप होंगे और यह समय आपका पीड़ामुक्त समय होगा।

2. भीड़ में अपनों की पहचान करना सीखें। जाति और धर्म के आधार पर अपनों की पहचान करने की गंदी मानसिकता का त्याग करें। जमाने की भीड़ के बीच में ही आपको मारने वाले व बचाने वाले होते हैं। यकीन करें कि आपको अपनों की भीड़ के बीच में दुश्मन एवम् दोस्त मिल सकते हैं।

– श्री राम जी को वनवास किसने दिया था?

– रावण को मारने का भेद किसने दिया था?

– महाभारत का युद्ध किन लोगों के मध्य हुआ था?

– मीरा को जहर किस ने दिया था?

– राजकुमारी सुनयना की शादी एक कोढ़ी के साथ किसने करवाई थी?

– आंतकवादी लादेन और अजमल कसाब के दोस्त अच्छे होते तो वे डॉक्टर अब्दुल कलाम बन गए होते।

– डॉक्टर अब्दुल कलाम के बुरे दोस्त होते तो वे आंतकवादी लादेन और अजमल कसाब बन गए होते।

– मॉ बाप बुरे हों तो ऐसा नहीं कि औलाद भी बुरी होगी।

– मॉ बाप अच्छे हों तो ऐसा नहीं कि औलाद भी अच्छी होगी। – अच्छे पेडों पर भी सड़े फल लगते हैं। और एक ही परिवार में एक सैनिक और एक चोर भी जन्म लेता है।

– मैं अपने दोस्तों के साथ मुजरा देखने गया। वे उसके अर्ध नग्न शरीर को देख रहे थे और मैं उसकी मजबूरी।

– जिन गरीबों के घर कच्चे होते हैं अक्सर उनकी बेटियॉ कुंवारी रह जाती हैं।

अगर आपको उपर की कहानियों का पता नहीं होगा तो आप अपने बुजुर्गों से इनका ज्ञान लीजिए।

3. अप बाहरी ज्ञान के साथ भीतरी ज्ञान भी हासिल करें। इससे आपकी हर इच्छा पूरी होगी। **TRUE KNOWLEDGE, TRUE RESULS AND TRUE LIFE.**

4. अपनी और दूसरों की बुराई का विरोध व अपनी अैर दूसरों की प्रशंसा न करने वाले आपके हितकारी कभी भी हो ही नहीं सकते। क्योंकि बुराई का विरोध न करने पर बुराई धीरे धीरे बढ़ती जाती है और अच्छाई की प्रशंसा न करने पर अच्छाई धीरे–धीरे कम हो जाती है।

5. कई बार कानों सुनी व ऑखे देखी बातें भी झूठी होती हैं। इसी कारण विश्व में न्यायालय होते हैं। अपराधी अपने आप को झूठ बोलकर बचाने के प्रयत्न में होता है और प्रार्थी सच्च बोल कर न्याय पाना चाहता है। एक अपराधी जो न्यायालय में जज के सामने मासूम बनकर खड़ा होता है जज उसकी शक्ल नही देखता बल्कि उसके अपराध को मध्यनजर रखते हुए सजा देता है।

एक फिल्म में एक लडका–लडकी जो पढ़ने में बहुत होशियार थे वे एक ही कक्षा में पढ़ते थे। लड़का मन ही मन लड़की को चाहता था जबकि लड़की को इसके बारे में कोई जानकारी व अहसास भी नहीं था। बड़ा होकर लड़का पुनिस में डी एस पी व लड़की जिला की क्लैक्टर बन

गई। दोनों एक ही स्थान पर कार्यरत हुए और डी एस पी को जिला क्लैक्टर बनी लड़की की सुरक्षा करने की जिम्मेवारी मिली। एक दिन सर्दियों के दिनों में जिला क्लैक्टर धूप में कार्यालय के बाहर बने स्वीमिंग पूल के पास अपनी कुर्सी मेज लगवा कर कार्यालय की फाईलों का निरीक्षण कर रही थी। अचानक तेज हवा चली और फाईलें पानी में स्वीमिंग पूल में गिर गई। जिला क्लैक्टर जिसे तैरना भी नहीं आता था फाईलों को बचाने के लिए स्वीमिंग पूल में कूद गई। जब डी एस पी ने देखा कि जिला क्लैक्टर डूबने लगी है तो उसने पानी में से फाईलें भी बाहर निकाली और जिला क्लैक्टर को अपनी गोदी में उठा कर बाहर निकाला। जिला क्लैक्टर को गोदी में उठाए किसी दुश्मन ने उनकी फोटो खींच ली और जिला क्लैक्टर के पति के पास भेज दी। लेकिन जिला क्लैक्टर के पति ने इसे मानने से इकार कर दिया था और फोटो देने वाले के सामने ही उन फोटो को फाड़ दिया था। पत्नी जब अपने पति को फोटो की वास्तविकता बताने लगी तो पति ने उसके होठों पर हाथ रख कर उसे बोलने से यह कर मना कर दिया कि मुझे तुझ पर बहुत भरोसा है।

एक आर्ट फिल्म में एक शराबी व मारपीट करने वाले पति का पंचायत में तलाक हो गया। उस तलाकशुदा पत्नी जिसने दूसरी शादी करने से इंकार कर दिया उसे एक कुंवारे पुजारी बुजर्ग ने अपने घर में उस औरत को शरण दे दी। उनके चरित्र पर लॉछन लगा कर गांव वालों ने उन दोनों को बिरादरी से बाहर निकाल हिया। इतना कुछ होने के उपरांत भी वे दोनों एक कमरे में एक ही साथ रहते रहे। कुंवारे पुजारी बुजर्ग की जब मौत हुई तो कुछ दिनों के उपरांत बंद लिफाफे में पड़ी उसकी लिखी वसीयत को पढ़ा गया। उस वसीयत में उस कुंवारे पुजारी बुजर्ग ने उस तलाकशुदा औरत को अपनी बेटी लिखा था और उसने अपनी सारी जायदाद उसके नाम की हुई थी।

6. कर्म हमेशा निष्काम भाव से करो और कभी भी फल की इच्छा मत करो। हमेशा किए गए कर्म से उसका फल हमेशा बड़ा होता है। **''गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा। तुम एक पैसा दोगे वो दस लाख**

देगा।'' सीमित फल मिलने से मनुष्यों को आपने दुःखी होते देखा होगा। वह मंदिर में 10 रूपए चढ़ाने का कर्म करने के उपरांत अज्ञानी होकर करोड़ों रूप्ए पाने का फल चाहता है जो संम्भव ही नहीं।

कर्म के दायरे को बड़ा करो न कि फल की चाहत के दायरे को। किया गया कर्म कभी भी निष्र्फल व फलहीन नहीं होता। उसका फल अवश्य ही प्राप्त होता है। कर्म बुरा होगा तो फल भी बुरा ही होता है। कई बार हमने एक इमानदार और सच्चे मनुष्य को भी दुःख मिलते देखें हैं। और झूठे और बेईमानी के कार्य करने वालों को हर तरह से सुखी व सम्पन्न देखा है। यह उसके द्धारा किए गए प्रारब्ध कर्मों का फल होता है। क्योंकि कुछ कर्मों के फल अल्प अवधि के और कुछ फल लम्बी अवधि के होते हैं। कुछ कर्मों के फल इसी जन्म में जल्दी या देरी से मिलते हैं। जबकि कुछ कर्मों के फल हमें अगले जन्म में या पिछले जन्म के किए अच्छे या बुरे कर्मों का फल इस जम्म में मिलता है। कर्म करते समय अपनी पूरी कुशलता से अपनी योग्यता उसमें डाल दो। इससे आपका उपर वाला आपको फल देते समय कोई संकोच ही नहीं करता है।

7. किसी की भी चुगली करने से हमेशा बचें। चुगली करने वाले की चुगली का पूरा दुष्प्रभाव हमारे कर्मों पर पड़ता है। जबकि किसी की प्रशंसा करने से उसका कोई फल हमें प्राप्त नहीं होता है। लेकिन इससे हमारा आचरण पवित्र होता है और प्रशंसा सुनने वाले को अच्छा कर्म करने का ज्ञान मिलता है। इसलिए हमेशा कर्मयोगी बनो। कर्महीन मनुष्य बिना कर्म के फल चाहता है और यह संम्भव ही नहीं है।

8. हर किए गए कर्म का फल मनुष्य का पीछा करता है। जब तक ऊपर वाला उस मनुष्य को फल न दे दे तब तक किया गया कर्म व उसका फल उसका पीछा करता है। कर्म अझ्रेर उसका फल समाप्त ही नहीं होता। इसलिए हमेशा कर्मयोगी बनो। कर्महीन मनुष्य बिना कर्म के फल चाहता है और यह सम्भव ही नहीं है।

9. एक सामान्य मनुष्य एक आदर्श मनुष्य के आदर्शों को अपना कर या अपने मन में उतार कर उसी की जैसी सफलता हासिल कर सकता है।

बुरे लोग बुरे लोगों के आचरण को अपनाकर बुरे बन जाते हैं। इसलिए अच्छे लोगों की जीवन गाथाएं की पुस्तकें पढ़ कर उनका आचरण करें।

10. भगवान–अल्लाह जी का अस्तित्व हर स्थान पर है। लेकिन हमें इसका ज्ञान होने के उपरांत भी हम मंदिर–मस्जिद में क्यों जाते हैं? हम मंदिर–मस्जिद में पूर्णतयः बाहर भीतर से साफ व पवित्र होकर जाते हैं। क्योंकि हमें देखने वाले लोग हमारा आचरण सीखते हैं और हम उनका। व्यक्तिगत तौर पर कोई भी मनुष्य किसी भी समय अपने भगवान–अल्लाह को याद कर सकता है। लोग नहाने के उपरांत ही उनका नाम लेना उचित समझते हैं। जबकि आप शौच में बैठे बैठे भी उस सर्वव्यापक का नाम ले सकते हैं। मृत्यु से पूर्व सर्वव्यापक का नाम लेने से एक साधारण व पापी मनुष्य को भी उसके सान्धिय व पैरों में स्थान प्राप्त होता है। अगर आप कहीं कथा या धार्मिक स्थल पर सार्वजनिक सम्बोंधन करने वाले हैं तो आपको उस स्थान में पवित्र होकर ही जाना होगा। क्योंकि भववान के स्थान के उपरांत दूसरा स्थान पवित्रता को दिया गया है। अतः भीतर बाहर से हमेशा आप पवित्र रहें।

11. इस बात का ध्यान रखें कि संसार आपको उस नजर से देखता है जिस नजर से आप संसार को देखते हो। संसार को आप अच्छी व सकारात्मक सोच से देखो और उसे ही अपने भीतर और बाहर अपनाओं।

12. कभी भी अपनी इंन्द्रियों का गुलाम मत बनो। प्रचंड अंधकार भी एक छोटे से दीए की रोशनी से भाग जाता है। जीवन के अंधेरे में छोटी सी सही लेकिन रोशनी की दृष्टि को हमेशा निरंतर जला कर रखो। माना कि छोटी सी टार्च पूरे अंधेरे को भगाने में सक्षम नहीं है लेकिन आपके जीवन रूपी अंधेरे के 10 कदमों को पक्का रोशन करती है। जैसे जैसे आप आगे बढ़ते हैं रोशनी भी आगे आगे बढ़कर आपको सुरक्षित रास्ता दिखाती जाती है और आप अंधेरे को पीछे छोड़ते जाते है।

13. मन के भीतर अज्ञानता का बहुत बड़ा भंडार होता है। अज्ञानता से भरे मन के कमरे में अगर आस रूपी दीये में ज्ञान रूपी तेल डाल कर उजाला करते रहोगे तो आपका भविष्य सदैव उज्जवल रहेगा।

14. अगर आप अपनी कामयाबी पाने के लिए दूसरों पर निर्भर रहोगे तो आप कभी भी सफल नहीं होंगे। यही आपको दृढ़ नहीं बल्कि कमजोर बनाती है और आपको विश्वासहीन भी बनाती है। जो लोग दूसरों को अपना सहारा बनाते हैं वही समय पर उनसे मदद न मिलने पर दुःखी रहते हैं और मुसीबत के समय अकेले पड़ जाते है। आप अपने आत्मबल के साथ साथ अपने आपको अपने उपर वाले का सहारा बनाओ। वो आपकी सहासता के लिए कोई भी साधन आपके लिए भेज देगा। लेकिन आपको अपने आप व अपने भगवान पर भरोसा करना पड़ेगा। आपकी मदद करने वाला भी ऊपर वाले का भेजा हुआ कोई प्रतिनिधि हो सकता है। आपको कई बार सफल होने के अवसर देने के लिए आपके पास कई लोग आते हैं। आप अहंकार और अज्ञानता के कारण उसे पहचानते ही नही। उसे आप भगवान का भेजा हुआ प्रतिनिधि मानकर उसकी बात सुनो और अच्छा सुझाव समझ कर उसकी सहाता भी लो। अन्यथा आप का हश्र भी नीचे की कहानी के पात्र जैसा ही होगा।

एक पुजारी दिन रात अपने भगवान की भक्ति व पूजा में मगन रहता था। एक बार उस इलाके में बाढ़ आई और पूरा इलाका पानी से भरने लगा। लोग सुरक्षित स्थानों पर पहुॅच गए और पुजारी को भी चलने को कहा। लेकिन पुजारी बोलता रहा कि उसे उसकी भक्ति पर भरोसा है और भगवान उसे स्वयं लेन के लिए आएंगे। जब पानी घुटने तक आया तो कुछ लोग नाव लेकर उसे लेने के लिए उसके पास अरए। तब भी पुजारी उनके साथ नहीं गया। पानी बढ़ता रहा और उसके उपरांत एक हैलीकाप्टर पुजारी को लेने आया। पुजारी ने तब भी जाने से इंकार कर दिया। अंत में डूबने से पुजारी की मौत हो गई। मरने के उपरांत उसने भगवान से शिकायत की कि मैंने तेरी पूरी उम्र भक्ति की लेकिन आप मुझे बचाने भी नहीं आए। भगवान से पुजारी को उतर दिया कि मैंने पहले तुझे लेने के लिए कुछ लेग भेजे आप नही आए। इसके बाद मैंने नाव व हैलीकाप्टर भेजा अैर तब भी आप नहीं आए। तूने मेरी भक्ति पर विश्वास किया लेकिन मुझ पर नहीं। इसी कारण तुम डूबे थे।

15. आप इस बात को समझने का प्रयास करें कि जो आपकी सहायता करता है उसमें कितने गुण हैं? उससे बार बार सहायता न मॉग कर उससे उसके गुणों को सीखो। इससे आप अपनी खुद की सहायता अपने आप करना तो सीखोगे ही लेकिन इसके उपरांत आप किसी अन्य की सहायता करने में भी सक्षम ही जाएंगे। क्योंकि आप जानते ही हैं कि **''भगवान उनकी सहायता करते है जो अपनी सहायता अपन आप करते हैं''।** आप शरीर से विकलांग हो सकते हैं लेकिन आपको मन से विकलांग कभी भी नहीं ही होना चाहिए। आपने एक कृत्रिम टांग वाली महिला को डॉसर बनते देखा होगा। आपने एक पैर से अपाहिज व्यक्ति की पहाड़ों पर चढ़ने की कहानियॉ सुनी होगी। आपने बस या रेलगाड़ी में स्वस्थ लोगों को भी भीख मॉगते देखा होगा। लेकिन इसके विपरीत आपने कई आत्म विश्वास से भरे और दृढ़ निश्चय वाले विकलांग लोगों को भीख मॉगने के बजाय सामान बेच कर कमाई करते देखा होगा। आप आत्मविश्वासी लोगों से ज्ञान लेकर आप स्वंय उन जैसा कार्य–कर्म करो। इससे आपका ज्ञान, भरोसा, लगन व उत्साह बढ़ेगा। आप सफलता की सीढ़ियॉ चढ़कर आसमान छू सकते हो।

16. क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है और यही क्रोध उसे हिंसक भी बनाता है। क्रोध मनुष्य के सर्वनाश का कारण भी बनता है और कई रिश्ते नाते उससे रूठ जाते हैं। क्रोध करने से उससे भगवान भी रूष्ट जाते हैं। जो मनुष्य क्रोध पर काबू पाने में असफल होता है वह जीवन की हर वस्तु को संभालने में भी असफल हो जाता है।

कौरवों और पांडवों के गुरू द्रोणाचार्य अपने शिष्यों को क्रोध पर कैसे काबू पाने के विषय पर कई दिनों से पढ़ा रहे थे। सभी शिष्यों ने इस विषय पर गुरू जी के द्धारा बताया गया पाठ सुना दिया लेकिन कई दिनों के उपरांत भी युधिष्ठर इसे नहीं सुना पा रहा था। इस पर गुरूजी ने बहुत क्रोध किया और उसे दंड देने लगे। तब युधिष्ठर ने गुरूजी को उतर दिया कि उसे यह पाठ तो एक ही दिन में याद हो गया था। लेकिन मैं कई बार कोशिश करने के उपरांत भी आज तक क्रोध पर काबू ही नहीं पा सका हूँ। आप भी तो हम शिष्यों को पाठ तो पढ़ा रहे हो

लेकिन आप भी तो आपने क्रोध पर अब तक काबू नहीं पा सके हो। युधिष्ठर के इस उतर ने गुरू द्रोणाचार्य को शर्मिंदा कर दिया था।

क्रोध होने पर आपको किसी भी इंसान को या किसी भी विषय पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए। ऐसा करने पर आपको ईश्वर के कानून पर भरोसा भी नहीं और न ही उसका आस्थ्या पर। मन की शंकाओं को मन में पनपने न दें। छोटी–छोटी शंकाएं आपके मन के भीतर बड़े बड़े पहाड़ बना देती हैं। इससे आपके जीवन का सुख–चैन छिन जाता है। अगर कोई आपसे बुरा करता है तो समय व कर्म उसका खुद हिसाब करता है। बुरा करने वाले और भगवान के बीच आप माध्यम न बनें। उपकार के बजाए परोपकार करें व चिंता न करके चिंतन करें।

19. सुख और दुख की कोई परिभाषा नहीं है। जब दुख कम होता है तो सुख आता है और जब सुख कम होता है तो दुख आता है। **''दुख के अभाव को सुख कहते हैं और सुख के अभाव को दुख कहते हैं।''**

20. इसी तरह सुंदरता की भी कोई परिभाषा नहीं है। जिस में धीरे धीरे नवीनता आए उसे सुन्दरता कहते हैं। आप इपने काम में भी नवीनता लाने का प्रयत्न करें। आप अपन काम और तरक्की का अवलोकन करें। आप एक साल पूर्व आप क्या थे और अभी आप क्या बन चुके हो। कई लोग चपड़ीह के पद पर कार्यरत होते हैं और नौकरी के साथ साथ पढ़ते हुए क्लर्क बनते है। किर किसी बड़े पद से रिटायर होते हैं। कई विभागों में क्लर्क से अफसर बनते कर्मचारी देखें जा सकते हैं। जो मेहनत नहीं करते वे जिस पद में भर्ती होते हैं उसी पद से रिटायर हो जाते हैं।

21. अपने इष्ट पर हमेशा भरोसा रखें। किसी भी मुसीबत के समय उसे सच्चे दिल से याद करेंगे तो आपको हर समस्या का समाधान अवश्य मिलेगा। अपना लाभ–हानि, अच्छा बुरा, मान–अपमान, रोग–निरोग, अमीरी–गरीबी उसपर छोड़ दीजिए और उसके हर फैसले को प्रसाद समझ कर आपनाएं। इसी में ही आपको सुख का अनुभव होगा।

22. बनना–बिगड़ना सृष्टि का एक नियम है। आप इसके नियमों को नहीं बदल सकते। मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। कर्म के उपर

भगवान का कोई भी अधिकार नहीं है। भगवान ने कर्म को अपने से भी उपर मान कर मनुष्य पर छोड़ दिया है कि वह जैसा कर्म करेगाा उसे वैसा ही फल मिलेगा। इसीलिए एक मनुष्य को कर्महीन न बनकर कर्मीयोगी बनकर हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए जिससे सच्चे मन से जिसकी कल्पना व इच्छा करता है उसे अपने दृढ़ निश्चय व भगवान पर अपनी आस्था से हासिल कर सकता है। **''सफल पदार्थ सब जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं''।**

23. किसी का भी भला करके कभी भी अहसान न जताएं। और न ही कभी अभिमान करें कि मैंने उसकी सहायता की है। अन्यथा आपके द्वारा किया गया कर्म कर्महीन की श्रेणी में बदल कर उसका फल भी फलहीन हो जाता है। इससे आपको न ही कोई यश मिलेगा और न ही कोई कीर्ति। आप इस बात का कभी भी अभिमान न करें कि मैंने किसी की सहायता की है। यह सहायता तो ऊपर वाला करता है। आप तो इसमें एक माध्यम हो, एक कठपुतली हो।

24. अगर आप क्रोध में आकर कोई अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हो तो आपको ईश्वर के कानून और आस्था पर भरोसा ही नहीं। मन की शंकाओं को मन के भीतर पनपने न दें। छोटी–छोटी शंकाएं मन के भीतर बड़े बड़े पहाड़ बना देती हैं। इससे आपके जीवन का सुख–चैन छिन जाता है। यदि कोई आपके साथ बुरा करता है तो समय व कर्म उसका हिसाब खुद करेगा। आप उसके व उपरवाले के बीच माध्यम न बनें। उपकार के बजाय परोपकार करें व चिंता के बजाय चिंतन करें।

25. सुख और दुख की परिभाषा नहीं होती। दुख के अभाव को सुख और सुख के अभाव को दुख कहते हैं। जब सुख कम होता है तो दुख आता है और जब दुख कम होता है तो सुख आता है।

26. सुन्दरता की परिभाषा होती है कि जिस में धीरे धीरे नवीनता आए। आप अपनी कार्यशैली में धीरे धीरे नवीनता लाएं। सोचें कि कल में यहॉ पर था क्या आज भी वहीं पर हूॅ? एक चपरासी मेहनत करके पहले चपरासी से क्लर्क बनता है। फिर तरक्की करके सुपरिटेंडेंट बनता है और फिर अफसर बन कर सेवानिवृत होता है। जबकि कई चपरासी के

पद पर भर्ती होकर चपरासी की नौकरी करते करते उसी पद से ही रिटायर हो जाते हैं। मजदूरी करने वाला मजदूर मिस्त्री के काम को देखते देखते मिस्त्री बन कर हथौड़ा, करंडी, गुनिया, फीता लेकर मिस्त्री का काम करना शुरू कर देता हैं। फिर वह ठेकेदार बनकर लोगों से काम लेता है और भरपूर पैसा कमाता है। जबकि कई मजदूरी एक मिस्त्री का काम कर सकते हैं लेकिन वह कभी औजार खरीद कर मिस्त्री का कार्य शुरू ही नहीं करते। आप इन लोगों के बारे में सोचें कि इनमें फर्क क्यों है?

27. मन को सदा नियंत्रित करके चलें। अन्यथा यही मन आपका सबसे बड़ा शत्रु बन जाएगा और आपसे बुरे कर्म करवा सकता है। आपका ज्ञान आपकी बुद्धि आपके अंतर्मन से भी श्रेष्ठ व उत्तम होनी चाहिए। इसलिए ज्ञान अर्जित करते रहें और ज्ञान बांटते रहें। यह आपके अंधकार रूपी जीवन में रोशनी का काम करेगा।

28. आपके द्वारा बॉटे जाने वाला ज्ञान ऐसा हो जिससे दूसरों का जीवन भी संवर जाए। कभी भी एक ही मनुष्य की मदद न करें। मदद का दायरा ता उम्र बढ़ाते जाएं। इससे आपकी परोपकारी नीति का विस्तार होगा। किसी भी मनुष्य को शिखर की ऊँचाईयों तक पहॅुचाने में उसकी मदद निरंतर जारी रखें।

29. जो मनुष्य फल की इच्छा से कर्म करता है वह इसी प्रणाली तक सीमित रह जाता है। कर्मयोगी बन कर कर्म करते रहें फल आपका पीछा हमेशा करता रहेगा।

30. अपने नजरिए को बदलें ंऔर इसे सकारात्मक बनाएं। छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब, अपना–पराया, अच्छा–बुरा अपने मन से मिटा दें। यह समझें कि वह आपका है और आप सबके। निराशा छोड़ कर निरंतर कर्म करने वाला मनुष्य ही अपने जीवन को कष्टहीन व संतुष्टिदायक बना सकता है। याद रखें कि कोई भी दुख आपको विचलित नहीं कर सकता जब तक आप उसे अपने भीतर स्थान नही देते। इसलिए दुख को सुख से बदलने का प्रयास करें। अच्छे कामों को प्राथमिकता दें और बुरे कर्मों को

भविष्य के लिए टालते रहें और लम्बे समय के उनरात उनका त्याग कर दें।

31. अपने मन पर जीत हासिल करें। अगर आप इस जग को जीतना चाहते हो तो अपने मन पर जीत हासिल करें। कहावत है न कि

''मन जीते जग जीत''

इस कहावत को अपने मन में पूर्णरूप से परिभाषित करें।

32. वर्तमान में इंसान इंसान का ही दुश्मन है। इंसान को समाप्त करने के लिए इंसान ही खतरनाक हथियार बना रहा है। पूरे विश्व में सभी धर्मों का आदर करते हुए आपने धर्म का प्रचार करते रहें। लेकिन अवलोकन करने पर समझा जाए तो सबसे बड़ा धर्म इंसानियत ही है। इसलिए सर्वप्रथम हमें एक अच्छा इंसान बनना चाहिए।

एक गरीब व्यक्ति को प्यास लगी थी। उसने एक सेठ की दहलीज पर कदम रखा और पानी पिलाने का आग्रह किया। सेठ ने उतर दिया कि पानी पिलाने वाला इंसान जो मैंने काम पर रखा है अभी नहीं आया। प्यासे इंसान ने सेठ से आग्रह किया कि वो तो पता नहीं कब आएगा। मुझे प्यास लगी है आप ही कुछ पल के लिए आप ही इंसान बन जाओ और मुझे पानी पिला दो। सेठ को प्यासे व्यक्ति की इंसान बनने की बात ने झकझोर कर रख दिया और सेठ ने उसे अपने गिलास में पानी भी पिलाया, गिलास खुद धोया और उसे खाने को भेजन भी दिया। आप स्वयं सोचो प्यासे व्यक्ति के एक ही शब्द ने सेठ को इंसान बना दिया।

आपको भी किसी भी व्यक्ति का एक शब्द आपकी जिंदगी को बदल सकता है।

किसी की एक गल (बात) और एक पल, जिदंगी का कर देगो हल।

33. मन को हमेशा शांत रखें और इसे शांतिप्रिय बनाएं। एक अशांत मन आपको दु:खों के सिवाय कुछ भी नहीं दे सकता। कुछ पल चुपचाप रह कर चिंतन करना सीखें। इससे भीतर बाहर शांति उत्पन्न होती है। शांत

मन आपको प्रेम व आनंद प्रदान करता है। सुख और दुःख मन की शांति और अशांति के ही परिणाम हैं।

34. अशांत मन दुखों को जन्म देता है और शांत मन सुखों के पनपने का कारण बनता है। फिर यही परम आनंद को जन्म देता है।

35. किसी से भी हद से ज्यादा लगाव रखने से व हर कार्य में उसकी मदद करने से अप उसे असफल बनाते हो। कभी उसे उसका कार्य आप उसे अपने आप भी करने दें। इससे उसका स्वयं पर आत्मविश्वास बढ़ता है। उसे उसके जीवन से जुड़े फैसले खुद लेने के लिए कहें। आप अपनी औलाद को उसके व्यक्तिगत फैसले लेने को भी प्रेरित व बाध्य करें।

36. हमेशा अध्यातम से जुड़े रहें। यही अध्यात्म आपको सुखों की ओर ले जाता है। अध्यात्म से विहीन मनुष्य सुख होने पर भी सुखी नहीं चिंतित दिखता है और अज्ञानता के कारण उसे भोग भी नहीं सकता।

37. अपने आत्मविश्वास की निरंतर बढ़ोतरी करते रहें। खुद के विश्वास से आगे बढ़ो। जीवन की उम्र व अवधि सीमित है। इसलिए समय को बर्बाद मत करो और हर एक पल समय का सदुपयोग करो। बुरे अतीत को याद करके दुखी होने से अच्छा है कि उससे सीख लो और अपने वर्तमान में सुधार करके अच्छे भविष्य का निर्माण करो। परेशान किस बात से हो? ऊपरवाले व स्वयं पर भरोसा करके कर्म करो। देखना सफलता आपके कदम चूमेगी। आपकी मेहनत का परिणाम कैसा होगा, उसे ऊपर वाले पर छोड दो। जितना आप पुरूषार्थ करोगे, उतना ही आपका जीवन सरल और सुखदायी होगा।

39. हमेशा ज्ञानवान व्यक्ति बनो। वर्तमान पर विश्वास करो। जो भी हो रहा है, अच्छा हो रहा है और जो होगा वह भी अच्छा ही होगा और यही भविष्य को उज्जवल बनाएगा। वेद, पुराण, धार्मिक व प्रेरणादायक पुस्तकें पढ़ने का कोई फायदा नहीं जब तक उनके भीतर लिखी बातों को अपने भीतर अवतरित न करो और उनका पालन न करो। इनको पढ़ कर आप ज्ञानी तो बन सकते हो लेकिन एक घड़ी के पैंडूलम की तरह दिशाहीन मनुष्य ही बनोगे। पैंडूलम दांए–बाएं चलता निरंतर है लेकिन कभी इधर

और कभी उधर। जीवन में लक्ष्य निर्धारित करें और उसे समय पर पूरा भी करें।

40 रावण बहुत बुद्धिमान था। लेकिन ज्ञानी नहीं था। उसकी अज्ञानता ने उसे पापी, क्रोधी, कामनावशी, अहंकारी बना दिया। जो बाद में उसकी मृत्यू का कारण बने। किसी भी मनुष्य को उसका उपरवाला उसे समान दृष्टि से देखता है। वह सबका भला चाहता है। लेक्नि उसने एक मनुष्य को कर्म करने के लिए स्वतंत्र छोड़ रखा है। हमारे कम र्पर उपरवाले का कोइ भी अधिकार नहीं है। हम अच्छा कर्म करें या बुरा कर्म करें। इसके लिए उपरवाले ने हमें स्वतंत्र छोड़ रखा है। इसलिए हमारा कर्म ही हमारे सुख दुख का निर्धारण बनता है।

41. एक मनुष्य का अच्छा कर्म उसके उपरवाले को उसके समीप लाता है। जबकि उसका बुरा कर्म उपरवाले को उससे दूर करता है। इसलिए भगवान की समीपता पाने के लिए हमेशा अच्छे कर्म करो। उन कर्मों का फल भी आपके लिए सुखदायी होगा।

42. जीवन में अपने आपको किसी के भी अधीन मत बनाओ। ज्ञानी लोगों से ज्ञान लेकर उसे अपने ऊपर अपनाओ। जब आप किसी को अपने जरूरत बना लेते हो तो आपके भीतर एक डर बनता है कि मैं कोई भी काम अकेले कर ही नहीं सकता। अपने भीतर के इस डर को समाप्त करके सीखने की कला अपनाएं। इससें आप अवश्य सफल होंगे। अन्यथा स्वयं पर भेरोसा नहीं करोगे तो लोग आपका शोषण करेंगे।

पुराने समय के राजा अपनी सेना भी रखते थे और कुशल सेनापतियों की बड़ी जमात भी। लेकिन राजा स्वयं भी एक कुशल सेनानायक होते थे और युद्धों मे खुद अपनी सेना का संचालन और नेतृत्व करते थे।

43. अगर आप कहीं नौकरी करते हैं तो आपका बॉस आपको आपकी हर गलती और कमजोरी पर टोकता है। कभी कभी तो बेहज्जती भी कर देता है। आपको अपनी कमजोरियों और गलतियों में सुधार लाना चाहिए। अगर आपकी अपनी गलती भी नहीं है और वह आपको फिर भी टोकने का आदी बन चुका है तो आपको उपका त्याग करना चाहिए। उसे यह

अहसास करवाओ कि मेरे में योग्यता है तो मैं कही भी या किसी भी स्थान पर नौकरी पा सकता हूॅ। आप अपने आत्मविश्वास से बोलो कि मुझे आपकी कभी भी कमी नहीं खलेगी। लेकिन आप मेरी कमी पक्का महसूस करोगे।

44. किसी का जरूरतमंद बनना किसी अभिशाप से कम नहीं। आप अपने भीतर सीखने की आदत डालें और ज्ञान अर्जित करें। यह ज्ञान आपकी ताकत बनेगा। आप अपने आपको अपनी 6 दिशाओं क्रमशः पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उपर व नीचे की ओर से ताकतवर बनें। जमाने की हिम्मत नहीं कि आपको कोई हरा पाए।

45. जीवन में आर्थिक व शारीरिक सहायता से बड़ी मानसिक सहायता होती है। अगर आप मानसिक दशा से ताकतवर हैं तो आर्थिक व शारीरिक दशाएं दोनों अपने आप सुधर जाएंगी।

46. एक बात का खास ध्यान रखें कि इस दुनिया में माता–पिता से बड़ा कोई भी नहीं जो बिना किसी आशा से आपका ध्यान रखते हो और आपका भला चाहता हो। माता पिता ही हैं जो आपको बचपन से पालते हैं और आपके सफल भविष्य की कामना करते हैं न कि अपनी सफलता के लिए। इसलिए उनका उपकार कभी न भूलें। उनका आशीर्वाद ऊपर वाले से भी बड़ा होता है। आप बुढ़ापे में भी उनका सान्धिय बनाएं रखें और उनकी तन, मन और धन से सेवा करते रहें। जीवन में साथ निभाने वाला आपके जीवन साथी जैसा कोई भी नहीं हो सकता। पति पत्नी एक दूसरे की भावना की कद्र करना सीखें। उस लड़की की हिम्मत देखें कि उसने अपने माता–पिता, सगे सम्बधियों को छोड़ कर आप एक पराए मर्द होने के उपरांत भी आपको अपना जीवन साथी बना लिया। और उस मर्द की भी हिम्मत देखो कि उसने एक बेगानी अन्जान लड़की को ऐ जीवन साथी के रूप में अपना लिया। दोनों ने आपस में एक दूसरे के गृहस्थी के पूरक हैं।

47. जो व्यक्ति असफलता के डर से फिर से उसी काम को अगर करने का प्रयत्न ही नहीं करता है तो वह पूरी जिदंगी कभी भी कामयाब हो ही नहीं सकता। आप उस काम को बार बार शुरू करो। और सफलता

मिलने तक करते रहो। थामस अल्वा एडीसन का जन्म 11 फरवरी 1847 को हुआ था। उसने 2774 बार बल्ब बनाने का प्रयत्न किया था और इसके उपरांत सफल हुआ था। कुछ लोग इसे 1000 बार असफल होने के बारे में बताते हैं। इतनी मेहनत के उपरांत सन् 1879 में बल्ब बनाने में सफलता मिली थी। उनकी इसी मेहनत से आज पूरा विश्व रोशनी से जगमगाता है।

48. एक मनुष्य को जहॉ तक सम्भव हो क्रोध करने से बचना चाहिए। क्रोध करने से भ्रम पैदा होता है और भ्रम से बुद्धि अस्थिर हो जाती है। जब बुद्धि अस्थिर होती है तो तर्क नष्ट हो जाता है। तर्क के बिना मनुष्य गलत निर्णय लेता है और अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करता है। इसीलिए कहा जाता है कि बंदर की प्रवृति बाले मनुष्य को कभी भी शक्तियाँ नहीं देनी चाहिए।

जब कोई मनुष्य अपनी इंन्द्रियों के अधीन और उन पर निर्भर हो जाता है तो उसके मन में लालसा, इच्छा और आलस्य जैसी बुरी आदतें जन्म लेती हैं। वह बिना कोई मेहनत किए आसानी से वस्तुएं पाना चाहता है। इसी कारण वह चोरी व ठगी जैसी आदतें अपनाता है।

49. आपको अपने कर्मों के प्रति पूरी तरह समर्पित रहना चाहिए। अन्यथा आपको पूरी उम्र संतोष नहीं होगा। आप अपने मन पर नियंत्रण रखें। मन प्रयत्नशील होता है। आप अपने मन पर अपना नियंत्रण रखें इससे आप अपने मन को उसे सकारात्मक की ओर मोड़ सकते हैं।

50. आप लोगों के साथ रिश्ते बनाने को प्राथमिकता दें। रिश्तों में कभी भी मर्यादा नहीं टूटनी चाहिए। रिश्तों में मर्यादा टूटने से उस रिश्ते का अंत भी निश्चित है। इस बात का खास ध्यान रखें कि सीमाओं का उल्लघंन कदापि भी न करें। कोई भी रिश्ता तभी टिकता है जब आप उसका सम्मान करें और सीमाओं के भीतर ही रहें। रिश्तों की नींव आपसी सम्मान, समपर्ण और सीमाओं के पालन करने पर टिकी होती हैं। अगर कोई मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के हितों के लिए रिश्ते की सीमाएं लांघता है तो रिश्ता धीरे–धीरे टूट जाता है। रिश्ता टूटने से अंत में विनाश ही शेष रह जाता है।

51. आप ऐसे लोगों से बचें जो आपके सामने आपकी बहुत प्रशंसा करते हैं और पीठ पीछे आपकी बुराई करते हैं। ऐसे लोगों से आपने अपने आपको बचाए रखना चाहिए। बाहर से ऐसे लोग अमृत व भीतर से जहर के समान होते हैं। ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखना अति आवश्यक है।

52. आप अपनी सभी खुशियाँ व दुःख अधितकर लोगों से समक्ष व्यक्त न करें। कुछ लोग आपके दुख पर आपसे सहानुभूति जताने के बजाय मजाक उड़ाने लगते हैं। लोग अपने हाथों में नमक लेकर घूमते हैं आपके न दिखने वाले जख्मों पर छिड़कते हैं। कुछ लोग दूसरों के सुखों से दुःखी होते है और दूसरे के दुःखों से सुखी होते हैं। अपने दुखों से दुखी नहीं बल्कि और के सुखों से दुखी होते हैं।

53. जीवन में हर बार कुछ नया करने की आवश्यकता होती है। इसकी शुरुआत आप आज से और अभी से करें। अगर आप नहीं करेंगे तो आपकी आने वाली पीढ़ी शुरू करेगी। उन्होंने ने भी नहीं की तो अगली पीढ़ी करेगी। फिर इसके लिए इंतजार क्यों करें? इसकी शुरुआत अपने शुभ हाथों से आप ही क्यों न करें। इस उपलब्धि का सेहरा आपके उपर होगा। आपके चित्र पर आपका खानदान इज्जत से अपने घरों में टाँग कर आने वाली पीढ़ियों को घमंड से बताएंगे के यही महान हसती है जिसने हमारे खानदान की परम्परा बदली थी। इसी कारण इलाके में हमारी इज्जत और रूतबा है।

54. दुखद अतीत को कभी भी याद न करें। परिवर्तन ही जीवन का नियम है। कुदरत की आदत और नियम है बनना और बिगड़ना। आपने देखा होगा कि जहॉ खाली स्थान थे वहॉ घर, बाग– बगीचे बन गए हैं। कई गरीब लोग अमीर बन चुके हैं जबकि कई अमीर लोग गरीब हैं। जिनकी आने वाली पीढ़ियॉ काबलियत न होने के कारण गरीब की जिंदगी जी रहे हैं। हमारी औलाद तीन तरह की होती है। एक पुत्र होता है जो अपने माता पिता की जायदाद को जैसे और जितनी थी उसे ही संभाल कर रखता है। दूसरा सुपुत्र होता है जो माता पिता की जायदाद को उसे तो संभाल कर रखता ही है और उसके अतिरिक्त अपनी मेहनत से उस जायदाद में बड़ी बढ़ौतरी करता है। तीसरा कुपुत्र होता है जो माता पिता

की जायदाद को बेच कर आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ भी नहीं छोड़ता है। आप सुपुत्र नहीं बन सकते तो कुपुत्र भी न बनें। पुत्र बन तों अवश्य रहें। इससे माता पिता की जायदाद है उसे सम्भाल कर तो रख ही सकते हो न।

55. महाभारत के युद्ध के उपरांत कुंती ने श्रीकृष्ण जी को पूछा था कि आपने यह विनाशकारी युद्ध क्यों करवाया? श्रीकृष्ण जी ने कुंती जी को बताया कि धरती पर अधर्म बहुत बढ़ गया था। कौरव अधर्मियों के साथ भीष्म पितामाह, गुरू द्रोणाचार्य, कुल गुरू कृपाचार्य जैसे धार्मिक प्रवृति वाले योद्धा भी अधर्म का साथ दे रहे थे और पांडवों व धार्मिक प्रवृति के लोगों के साथ अन्याय एवम् अत्याचार कर रहे थे। बार बार बुद्धिजीवियों व मेरे द्धारा समझाए जाने पर भी अपना हठ नहीं छोड़ रहे थे। इसलिए पुनः धर्म की स्थापना हेतु यह युद्ध अनिवार्य था।

56. अगर आप में गुण हैं और आगे बढ़ने की चाहत है तो आप हर क्षेत्र में गुणवान बनें। अगर आप वास्तव में गुणवान बनते हैं तो आपके गुरू भी आपकी गाड़ी तक के ड्राईवर बनना भी अपना सौभाग्य समझेंगे। जैसे गुणों से सर्व सम्पन्न अर्जुन के श्रीकृष्ण जी रथवान बन गए थे।

57. आपने देखा होगा कि पुराने घर के स्थान पर नया घर बनाने के लिए पुराने घर को तोड़ना पड़ता है। उस पुराने घर को गिराने के लिए आर्थिक नुकसान भी होता है। लेकिन नए घर बनाने की उमंग, उत्साह, जोश व खुशी से होने वाले खर्च को भी खुशी से बर्दाश्त किया जाता है। इसलिए किसी भी काम में नवीनता लाने के लिए हमेशा ही उत्साहित रहें।

58. पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहन, प्रेमी–प्रेमिका, भाई–भाई, ग्राहक–दुकानदार, नौकर–मालिक, एक इंसान–दूसरा इंसान, पड़ोंसी–पड़ोसी इत्सादि के आपसी पवित्र रिश्ते होते हैं। अगर इनमें से आपस में कोई भी मन मुटाव हो जाता है तो जहॉ तक संम्भव हो एक दूसरे को मनाने में पहल आप ही करें। पति–पत्नी, माता–पिता, भाई–बहन, प्रेमी–प्रेमिका, भाई–भाई अगर एक ही घर में रहते हैं तो सुबह की चाय सर्वप्रथम अपने इष्ट को समर्पित करने के उपरांत उसे प्रसाद

समझकर सुबह टीवी के पास बैठकर समाचार सुनते सुनते या बाहर पक्षियों की चहचहाती आवाजें सुन की ग्रहण करें। इस क्रमानुसार को यहॉ तक सम्भव हो रात का भोजन भी इसी तरह ही साथ बैठ कर खाएंगे तो जिदंगी जीने का बहुत आनंद आएगा। कभी भी आपस में मन मुटाव नहीं होगा। होगा भी तो इस प्लेटफार्म पर टी वी के रिमोट कंट्रोल का आदान प्रदान करते हुए बातचीत करने का मौका मिलेगा। अपनों के साथ हमेशा रिश्ते कायम रखने के लिए नीचे लिखी कविता को हमेशा याद रखें।

मैं भी रूठा तुम भी रूठ गए

फिर मनाएगा कौन?

यह छोटी सी दरार है कल खाई बन जाएगी,

फिर भरेगा कौन?

इधर मैं चुप उधर तुम भी चुप

इस चुप्पी को तोड़ेगा पाएगा कौन?

छोटी सी बात को दिल में लगा लोगे गर

फिर रिश्ता निभाएगा कौन?

दुखी मैं भी और तुम भी बिछडकर दुखी

सोचो फिर मनाने को हाथ बढ़ाएगा कौन?

न मैं राजी न तुम राजी

फिर माफ करने का बड़प्पन दिखएगा कौन?

डूब जाएगा गर दिल कभी गमों में

फिर हिम्मत बन्धाएगा कौन?

दोनों में से किसी ने मूॅद ली गर आम्खें

फिर इस बात से पछताएगा कौन?

मैं भी रूठा तुम भी रूठ गए

फिर मनाएगा कौन?

59. इस डुनिया में आपको किसी भी अच्छे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने वाले बहुत कम मिलेंगे। जबकि निरउत्साहित करने वाले व रोकने वाले बहुत अधिक संख्या में। ऐसे लोग भी आपको ज्ञान देने वाले मिलेंगे जो स्वयं अपनी लिदंगी में पूरी ताह असफल हैं। उनके लिए आप शालीनता से उन्हें यह उत्तर दे सकते हैं।

उन्हें दिल तोड़ कर मुड़ने का हुनर आता है
हमें टूट कर भी जुड़ने का हुनर आता है।

क्या कर लोगे तुम मेरे पंखों को काट कर
हमें बिन पंख भी उड़ने का हुनर आता है।

वास्ता जान का देकर न डराया कर
हमें तेरे कंधों पर भी चढ़ने का हुनर आता है।

मुबारक हो तुम्इें उजालों का शहर
हमें अंधेरें से भी लड़ने का हुनर आता है।

60. किसी भी नए साल में होने वाले होली, ईद, दीवाली, क्रिसमिस डे जैसे त्योहारों में आप प्रण करके अपने रूठों के इस तरह मना सकते हैं।

होली / ईद / दीवाली / किसमिस डे पर

सारे शिकवे गिले भूल जाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

प्यार के रंग में नहाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

अब कलाई न उनसे छुड़ाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

वे मनाएंगे और मान जाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

चॉद तारों का दिल तुम नहीं तोडोगे
अपने कमरे की खिड़की खुली छोड़ोगे।

या तो आएंगे हम या बुलाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

देखते देखते तुमने यह क्या कर दिया
इस तलक हमको रंगों से भर दिया।

छोड़िए छोड़िए अब नहाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

सहर तलक गहरे पानी तलक
नवजवानी से लेकर जवानी तलक

जो भी वादे किए अब निभाएंगे हम
इस तरह आज होली मनाएंगे हम।

61. माता–पिता जी का हमारे जीवन में बहुत महत्व और बड़ो योगदान है। औलाद और माता–पिता एक दूसरे के पूरक हैं। औलाद स्वार्थी होती है जो माता पिता जी की जायदाद की इच्छुक होती है। लेकिन माता

पिता निस्वार्थ भाव से ममता के वश होकर अपनी औलाद की करमयाबी के लिए खर्च, यत्न व निस्वार्थ सेवा में लगे रहते हैं। शुभ काम को जाने से पहले दही खिलाना, माथा चूमना, नजरों से ओझल होने तक देखते रहना और ऑसूओं के साथ घर में जाना ऐसा दुनिया में केवल एक मॉ ही कर सकती है। यह दोनों क्या और कौन है नीचे लिखी कविताओं से उनका मुल्यांकन करें।

घर का हुआ बंटवारा किसी के हिस्से मकान

किसी के हिस्से दुकान आई।

परिवार में मैं सबसे छोटा/बड़ा था

मेरे हिस्से में मॉ आई।

एक मॉ के दो बेटे थे। एक का घर नीचली मंजिल में व दूसरे बेटे का घर उपरी मंजिल पर था। मॉ 1 से 15 तारीख को एक बेटे के घर व 16 सं 30 तारी,ा को दूसरे बेटे के झार खाना खाती थी। समस्या इसमें एक ही थी कि जब भी जो महीना 31 तारीख का होता था मॉ को उस दिन उपवास रखना पड़ता था।

हमने बचपन में मॉ की गोद में एक स्तन से दूध पीते समय दूसरे स्तन पर अपने नन्हें पैरों से कई बार मारा होगा। लेकिन उस मॉ ने कभी भी हमें दूध पिलाना बंद नहीं किया था। चोट खाने के उपरांत भी दूध पिलाना बंद नहीं करना ऐसा केवल और केवल एक मॉ ही तो कर सकती है।

मॉ

मॉ संवेदना है भावना है अहसास है,
मॉ फूलों से जीवन की खुशियों का वास है।

मॉ रोते हुए बच्चों का खुशनुमा पालना है,
मॉ रेगिस्तसन में मीठे जल का झरना है।

मॉ लोरी है गीत है प्यारी सी थाप है,
मॉ फूलों की सजी थाली और मत्रों का जाप है।

मॉ ऑसुओं से सिसकता हुआ किनारा है,
मॉ तपते हुए गालों पर ठंडी जलधारा है।

मॉ धूप में झूलसते दिलों पर कोयल की बोली है,
मॉ मेहंदी है सिंदूर है रोली है।

मॉ कलम है कागज है दवात है स्याही है,
मॉ परमात्मा के समक्ष हमारी गवाही है।

मॉ त्याग है तपस्या है सेवा है,
मॉ गर्म जलेबी व फूक से ठंडा किया हलवा कलेवा है।

मॉ साधना है जाप है हवन है,
मॉ हमारी जिंदगी के मुहल्लों का भवन है।

मॉ चूड़ी वाले हाथों के मजबूत कंधों का नाम है,
मॉ काशी हज है और चारों धाम हे।

मॉ चिंता है याद है हिचकी है,
मॉ बच्चों की चोट पर लगी फूॅक और सिसकी है।

मॉ चुल्हा गिली लकड़ी, धुऑ हाथ का छाला है,
मॉ कड़वी जिंदगी में अमृत प्याला है।

मॉ धरती है संसार है धूरी है,
मॉ के बिना जिंदगी की कल्पना भी अधूरी है।

मॉ की यह कथा अनादि है यह अध्याय नहीं है,
दूनिया में मॉ का कोई पर्याय नहीं है।

मॉ का महत्व दूनियॉ में कोई हो नहीं सकता,
मॉ जैसा दूनियां में कोई हो नहीं सकता।

पिता

पिता परमात्मा के प्रति आसक्ति है,
पिता इस गृहस्थ आश्रम की भक्ति है।

पिता अपनी इच्छाओं का हनन,
और परिवार की इच्छाओं की पूर्ति है।

पिता जीवन है संबल है शक्ति है,
पिता सुष्टि का अभिव्यक्ति है।

पिता अंगूली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी मीठा कभी कड़वा कभी खारा है।

पिता पालन है पोषण है परिवार का अनुशासन है,
पिता डंडे के जोर से चलाने वाला प्रशासन है।

पिता रोटी है कपड़ा है मकान है,
पिता हम जैसे छोटे परिंदों का आसमान है।

पिता दिखाई न देने वाला प्यार है,
पिता है तो हम जैसे बच्चों को इंतजार है।

पिता बच्चों के ढेर सारे सपने हैं,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने हैं।

पिता है तो परिवार में प्रतिपल राग है,
पिता है तो मॉ का मंगलसूत्र बिन्दी सुहाग है।

पिता सुरक्षित है तो सिर पर हाथ है,
पिता नही ंतो औलाद अनाथ है।

62. आप अपनी जिंदगी में परिवार व अपनों की जिम्मेवारियॉ लीजिए जिन्हें आप कामयाब करना चाहते हैं। इससे आप अपने आपको व्यस्त रखेंगे तो आप अपने समय का सदुपयोग कर पाएंगे। भगवान भी आपकी

जिम्मेवारियों के कारण आपको अपने पास जल्दी नहीं बुलाएंगे। आप भी अपने भगवान से प्रार्थना करेंगे कि मेरे पास लोगों को सफल बनाने की जिम्मेवारियॉ हैं। इसलिए मुझे जल्दी अपने पास मत बुलाना। आप यकीन करना कि भगवान भी आपकी प्रार्थना को सुनेगा और मौत भी आपके पाास से कई बार गुजर कर चली जाएगी।

मैं हनुमान जी का तुच्छ सा भक्त हॅू। मैं इनकी कसम खाकर कहता हॅू कि मेरे साथ ऐसा दर्जनों बार हो चुका है कि मेरी मौत कई बार मुझे छू करके दूर से ही निकल गई है। आप इस कविता को गुनगुनाया करें।

आहिस्ता चल ए मेरी जिंदगी,
अभी कई कर्ज चुकाना बांकी है

कईयों के दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

जब तू रफतार से चलने लगी तो
मेरे कुछ अपने रूठ गए

कुछ जुड़ते जुड़ते छूट गए।

उन रूठों को मनाना बाकी है
रोतों को हंसाना बाकी है।

अभी कई कर्ज चुकाना बांकी है
कईयों के दर्द मिटाना बाकी है

कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

कुछ रिश्ते बनकर टूट गए
कुछ जुड़ते जुड़ते छूट गए,

इन छूटे टूटे रितों के जख्मों को मिटाना बाकी है।

अभी कई कर्ज चुकाना बांकी है
कईयों के दर्द मिटाना बाकी है

कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

कुछ हसरतें अधूरी बाकी हैं
कुछ काम जरूरी बाकी हैं

जीवन की उलझी पहेली को पूरी
तरह सुलझाना बाकी है।

अभी कई कर्ज चुकाना बांकी है
कईयों के दर्द मिटाना बाकी है

कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

जब मेरी सॉसों को रूक जाना है
फिर क्या खोना क्या पाना है।

पर इस मन रूपी जिद्धी बच्चे को
यह बात बताना बाकी है।

आहिस्ता चल ए मेरी जिंदगी,
अभी कई कर्ज चुकाना बांकी है

कईयों के दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है।

63. अगर आप एक सुलझे हुए बड़े कामयाब व्यक्ति हो तो आप अपने आपको आईने में देखना कि आप क्या थे और क्या से क्या बन गए। आज लोग आपका साथ पाना चाहते हैं। आपको अपना आदर्श मानना चाहते हैं। आप इससे फूले नहीं समाओगे कि क्या मैं इतना बड़ा बन गया हॅू कि लोग मेरी समीपता पाने की इच्छुक हैं? आप इस कविता को पढ़ कर अपने आप को पूछना कि मैंने कैसे इतनी तरक्की हासिल की?

आजकल मैं पूछता हॅू खूद से,

क्या है मेरी सफलता का राज,

कौन से किए जतन, कैसे निकाले समुन्द्र से रतन।

जिससे हुआ जीवन में खुशियों का आगाज।

आजकल मैं पूछता हॅू खूद से,

क्या है मेरी सफलता का राज,
जब बचा नहीं था कोई विकल्प, तभी लिया था एक संकल्प।
आओ मिल कर चलें सफलता के शिखर पर।
अपनी आत्म शक्ति के दम पर।

सबसे पहले बना एक सुपर पलान।
जमीन से आसमान तक पहुॅचने का किया आहवान।
रास्ता तैयार था पहुॅचना था उस पार।
पर कुछ बाधाएं सीना ताने खड़ी थी उस पार।
बाधाओं को देखा समझा फिर उनके आगे दिया सीना तान।
सबसे पहले मिटाया सुस्ती का संसार।
टालमटोल ने फिर से सिर उठाया और भरी हुॅकार,
उसका भी मेरे आत्मविश्वास ने कर दिया अंतिम संस्कार।
लेकर लक्ष्य चले ऑखों मे अपना सीना तान।
सफलता का जनून जलने वालों को कर रहा था हैरान।
आत्मविश्वास के गुलदस्ते से रास्ता बना आसान।
मिले मंत्र मोटीवेटरों से हर शंका का मिला समाधान।
रास्तों में से और रास्ते निकलते चले गए।
और हम आगे, और आगे बढ़ते चले गए।
मेहनत की मिसाल से सही रास्ते चुनते गए।
मजिलें मिलती गई और खुशियॉ भी।
हम उलझनों को स्वेटरों के बीच बुनते गए।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों ये रास्ता नहीं था आसान।

युद्ध भी अपनों के बीच में हुआ था घमासान।
हालातों ने मुझे रोका, अपनों और विरोधियों ने टोका।
पर सफलता का रास्ता हिम्मत से बना लिया आसान।।
आजकल मैं पूछता हूॅं खूद से।
क्या है मेरी सफलता का राज।
कौन से किए जतन कैसे निकाले समुन्द्र से रतन।
जिससे हुआ जीवन में खुशियों का आगाज।

,,,,,,,,,,,

अमीर बनने की चाहत रखने वाले पाठकों के लिए

– क्या आप अमीर बनना चाहते हैं?

– क्या आप अपना व्यक्तिगत विकास करना चाहते हैं?

– क्या आप अपने अधूरे सपनों को पूरा करना चाहते हैं?

– क्या आप सफल लोगों की सूची में आना चाहते हैं?

– क्या आप किसी की आर्थिक मदद करना चाहते हैं?

अगर आप का उतर हॉ है तो आईए मैं आपको इस पुस्तक के माध्यम से इन सब को हासिल करने में मदद करूँ।

लेखक : करतार सिहं सॉदिल

मोबाईल– 9816044702

Email :kartarsandil@rediffmail.com